



## युद्ध की मार से जूझते ईरान में खाद्य वस्तुओं की कीमतें बेतहाशा बढ़ीं

**तेल, अंडे और चावल हुए महंगे तो दवाओं और जरूरी सामानों का भी गहारा संकट**

तेहरान  
इजराइल और अमेरिका के साथ हुए सैन्य संघर्ष के बाद ईरान में युद्ध का असर अब आम लोगों की जेबों के हर पहलू पर दिखाई देने लगा है। बढ़ती महंगाई, दवाओं की कमी, उत्पादन ठप होने और रोजगार संकट ने देश की आर्थिक स्थिति को गंभीर चुनौती के सामने खड़ा कर दिया है।

हालात ऐसे हैं कि लोगों की आय महीने के बीच में ही खत्म हो रही है और कई परिवार

राशन तथा रोजमर्रा की जरूरतों का सामान भी किस्तों पर खरीदने को मजबूर हैं।

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार तेहरान के बुजुर्ग सरकारी कर्मचारी बताते हैं कि उन्होंने मोहल्ले की दुकान से उधार राशन लिया था, लेकिन अगले दिन भुगतान करने पहुंचे तो सामान का बिल लगभग दोगुना हो चुका था। स्थानीय लोगों के अनुसार युद्ध के बाद महंगाई इतनी तेजी से बढ़ी है कि सामान्य परिवारों का बजट पूरी तरह विगड़ गया है। युद्ध के बाद से देश में आवश्यक खाद्य वस्तुओं की कीमतों में रिकार्ड वृद्धि दर्ज की गई है।

कुकिंग आयल के दाम 430 प्रतिशत, अंडा 345 प्रतिशत तो चावल 287 प्रतिशत और दूध के 139 प्रतिशत तक दाम बढ़ गए हैं। तेहरान, इस्फहान, अहवाज और मशहद जैसे प्रमुख

शहरों में लोग अब बमबारी से अधिक रसोई के खर्च और भविष्य की अनिश्चितता को लेकर चिंतित हैं।

इजरायली अमले के बाद शुरू हुआ युद्ध तो लोगों को लगा यह जल्द समाप्त हो जाएगा। इसी दौरान अमेरिका की एंटी ने युद्ध को लंबा चलने वाला बना दिया। शुरूआती दौर में कुछ लोगों को उम्मीद थी कि हालात राजनीतिक बदलाव की दिशा में बढ़ेंगे, लेकिन समय बीतने के साथ आम नागरिकों का ध्यान अब केवल शांति और स्थिरता की ओर केंद्रित हो गया है। सरकार की आलोचना करने वाले भी अब इस बात को लेकर मुखर हो रहे हैं।

बहरहाल युद्ध का असर औद्योगिक उत्पादन और स्वास्थ्य सेवाओं पर भी पड़ा है। मशहद के पास एक फेक्ट्री प्रबंधन के अनुसार कच्चे माल

की कमी के कारण उत्पादन बंद करना पड़ा और कर्मचारियों को छुट्टी पर भेज दिया गया है। वहीं इजराइली हमलों से पेट्रोकेमिकल उद्योग भी प्रभावित हुआ है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में स्थिति और गंभीर बताई जा रही है। डाक्टरों के अनुसार फार्मेशियां अब दवाएं सीमित मात्रा में दे रही हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने चिकित्सकों को केवल अत्यावश्यक दवाएं लिखने को सलाह दी है। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट में बताया जा रहा है, हीमोफीलिया मरीजों के लिए आवश्यक दवाओं का भंडार लगभग समाप्त हो चुका है, जबकि आयात में भी भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। युद्ध और आर्थिक संकट के इस दोहरे दबाव ने ईरान के आम नागरिकों के सामने अभूतपूर्व चुनौतियां खड़ी कर दी हैं।

### न्यूज़ ब्रीफ

**ट्रंप का दावा- ईरान ने अमेरिकी सैन्य हेलिकाप्टर मार गिराया, जवाबी कार्रवाई की चेतावनी**



वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया है कि होर्मुज जलडमरूमध्य के निकट एक अमेरिकी सैन्य हेलिकाप्टर को ईरान ने मार गिराया। उन्होंने कहा कि इस घटना को अमेरिका गंभीरता से ले रहा है और इसका उचित जवाब दिया जाएगा। ट्रंप के अनुसार, दुर्घटनाग्रस्त हुआ हेलिकाप्टर अमेरिकी सेना का एएच-64 अपाचे था। हालांकि हेलिकाप्टर के दोनों पायलटों को सुरक्षित बचा लिया गया और उनकी स्थिति सामान्य बताई जा रही है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने घटना के लिए सीधे तौर पर ईरान को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि अमेरिका इस मामले पर चुप नहीं बैठेगा। उधर, अमेरिकी सेंट्रल कमांड के प्रवक्ता कैप्टन टिम हाकिन्स ने बताया कि बचाव अभियान में पहली बार एक मानवरहित ड्रोन नौका का इस्तेमाल किया गया। उनके अनुसार, हेलिकाप्टर के समुद्र में गिरने के बाद ड्रोन नौका ने दोनों पायलटों का पता लगाया और लगभग दो घंटे तक पानी में रहने के बाद उन्हें सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कैप्टन हाकिन्स ने कहा कि यह अभियान आधुनिक सैन्य बचाव तकनीक के उपयोग का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। उन्होंने बताया कि ड्रोन नौका ने कठिन परिस्थितियों में भी तेजी से पायलटों तक पहुंचकर उनकी जान बचाने में मदद की। हालांकि ईरान की ओर से इस अमेरिकी दावे पर फिलहाल कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

**पीओके में बवाल: प्रतिबंध के विरोध में सड़कों पर उतरे लोग, पाकिस्तानी सुरक्षा बलों की फायरिंग में कई मौतें**



मुजफ्फराबाद। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में हालात एक बार फिर तनावपूर्ण हो गए हैं। क्षेत्र में सक्रिय जाइंट अवामी एवशन कमेटी (जेएएसी) पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच हुई झड़पों के दौरान पाकिस्तानी सुरक्षा बलों द्वारा की गई फायरिंग में कई लोगों की मौत हो गई, जबकि दर्जनों लोग घायल बताए जा रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार, पाकिस्तान सरकार ने 6 जून को जेएएसी पर आतंकवाद-रोधी कानूनों के तहत प्रतिबंध लगाया था। इसके विरोध में पीओके के विभिन्न शहरों में हजारों लोग सड़कों पर उतर आए। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि यह संगठन स्थानीय लोगों के आर्थिक और नागरिक अधिकारों की आवाज उठा रहा था और उस पर लगाया गया प्रतिबंध लोकतांत्रिक अधिकारों का दमन है। हिंसक झड़पों के बाद हालात और बिगड़ गए। विभिन्न मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक कम से कम 11 लोगों की मौत हुई है और 70 से अधिक लोग घायल हुए हैं। कई इलाकों में सुरक्षा बलों की अतिरिक्त तैनाती की गई है और स्थिति पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है। इस घटनाक्रम पर भारत ने भी तीखी प्रतिक्रिया दी है। विदेश मंत्रालय ने पीओके में प्रदर्शनकारियों के खिलाफ बल प्रयोग की निंदा करते हुए इसे पाकिस्तान द्वारा अपनी प्रशासनिक विफलताओं को छिपाने का प्रयास बताया है। मंत्रालय ने कहा कि क्षेत्र के लोगों के अधिकारों और सुरक्षा का सम्मान किया जाना चाहिए।

**नैतिकता की पराकाष्ठा: बेटे ने मां संग बनाया रिश्ता, छोड़ा परिवार**

लंदन। नैतिकता और सामाजिक मर्यादा की सारी हदें पार कर ब्रिटेन में ऐसी चौकाने वाली घटना सामने आई है, जिसने पूरी दुनिया को हिला दिया है। एक विवाहित युवक ने अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ अपनी सगी जैविक मां के साथ नया जीवन शुरू किया है। यह शर्मनाक मामला न सिर्फ ब्रिटेन बल्कि वैश्विक स्तर पर बहस और निंदा का केंद्र बन गया है, जिसने मानवीय मूल्यों पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। दरअसल दिल दहला देने वाली कहानी की शुरुआत किम वेस्ट से होती है, जिन्होंने 19 साल की उम्र में कैलिफोर्निया में पढ़ाई के दौरान बेटे फोर्ड को जन्म दिया था। जन्म के एक हफ्ते बाद, बच्चे की देखभाल करने में असमर्थ किम ने बेटे को गोद देने का फैसला कर वापस यूनाइटेड किंगडम लौट गईं। करीब 30 सालों तक मां और बेटे के बीच कोई संपर्क नहीं रहा। साल 2013 में, बेटे, जो तब अमेरिका के कोलोराडो में अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रह रहा था, अपने जैविक माता-पिता को खोजने की कोशिश करने लगा। कड़ी मशक्कत के बाद सफलतापूर्वक किम वेस्ट का पता लगाकर संपर्क साधा शुरुआत में, मां और बेटे के बीच की बातचीत पत्रों और फोन काल्स तक सीमित थी, लेकिन साल 2014 में जब दोनों पहली बार आमने-सामने मिले, तब जो हुआ वह अप्रत्याशित था।

## ईरान-अमेरिका की लड़ाई पहुंची बहरीन, मनामा में यूएस नौसेना केन्द्रीय कमान मुख्यालय पर ड्रोन हमला

तेहरान/मनामा/वाशिंगटन  
ईरान और अमेरिका के बीच छिड़ी जंग फारस की खाड़ी पर स्थित बहरीन की राजधानी मनामा तक पहुंच गई है। ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कांपस (आईआरजीसी) ने दावा किया है कि उसने दक्षिणी ईरान पर हुए अमेरिकी हमलों के जवाब में बुधवार तड़के (यूएई समयानुसार) बहरीन की राजधानी मनामा में स्थित अमेरिकी नौसेना केन्द्रीय कमान मुख्यालय पर ड्रोन हमला किया है। अमेरिकी सेना के सेंट्रल कमांड (सेंटकाम) ने कहा कि उसने मंगलवार को आत्मरक्षा के जवाब में दक्षिणी ईरान पर हमले किए। यह कार्रवाई सोमवार को होर्मुज जलडमरूमध्य के ऊपर अमेरिकी लड़ाकू हेलीकाप्टर अपाचे को मार गिराए जाने के जवाब में की गई।

रिपोर्ट के अनुसार, तेहरान में अधिकारियों ने कहा कि किसी भी हमले से निपटने के लिए ईरान की वायु रक्षा प्रणाली को सक्रिय कर दिया है। अधिकारियों ने कहा कि ईरान ने बुशहर के ऊपर एक हेलिकाप्टर और एक अमेरिकी ड्रोन (एमक्व्यू-9) को मार गिराया है। इस बीच आईआरजीसी और खतम अल-अंबिया मुख्यालय ने पुष्टि की है कि कुछ अमेरिकी ठिकानों पर हमले किए गए हैं। दोनों ने सिर्फ एक स्थान किया जिक्र किया है। वह है- बहरीन की राजधानी मनामा स्थित अमेरिकी नौसेना केन्द्रीय कमान मुख्यालय। खास बात यह है कि ईरान में खतम अल-अंबिया महत्वपूर्ण सैन्य कमान है। खतम अल-अंबिया को आईआरजीसी के तहत देश के सशस्त्र बलों, पारंपरिक सेना और खुफिया एजेंसियों के बीच सैन्य परिचालन और रणनीतिक रक्षा एवं आक्रामक अभियानों के समन्वय का सर्वोच्च केंद्र कहा जाता है।

अभी तक यह साफ नहीं हो सका है कि ईरान ने कितने ड्रोन से मनामा स्थित अमेरिकी नौसेना केन्द्रीय कमान मुख्यालय को निशाना बनाया है। यह भी साफ नहीं किया गया कि क्या इस हमले में मिसाइलों का इस्तेमाल हुआ या नहीं। खतम अल-अंबिया मुख्यालय के बयान में मूल रूप से यह कहा गया है कि देश के दक्षिणी इलाकों में अमेरिकी सेना की आक्रामकता (जिसका बहाना उनका हेलीकाप्टर गिराया जाना था) के जवाब में देश की सेना और आईआरजीसी ने मिलकर इलाके में मौजूद कुछ अमेरिकी ठिकानों पर जबरदस्त



हमला किया।

खतम अल-अंबिया के बयान में कहा गया है कि अमेरिकी सेना ने ईरान के विरुद्ध आक्रामकता दोहराई, तो इलाके में स्थित समाम अमेरिकी ठिकानों पर और जोरदार और बड़े पैमाने पर हमले किए जाएंगे। सेंटकाम ने मंगलवार देररात कहा कि सोमवार को अपाचे हेलीकाप्टर को गिराए जाने के जवाब में ईरान पर आत्मरक्षा के लिए हमले किए गए। बदला पूरा कर लिया गया है। उधर, अपाचे के घटनाक्रम पर राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि इरानियों ने उस हेलीकाप्टर को मार गिराया जो होर्मुज जलडमरूमध्य के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। भगवान का शुकू है कि दोनों पायलट सुरक्षित बचा लिए गए। उन्होंने कहा था कि इसका जवाब बहुत कड़ा होगा।

इस बयान से कुछ घंटे पहले ट्रंप ने कहा था कि ईरान के साथ समझौता करने की कोशिशें अंतिम चरण में हैं और दो या तीन दिनों में समझौता हो सकता है। अपाचे की घटना के बाद बातचीत किस स्थिति में है, यह स्पष्ट नहीं हो सका है। उधर, इजराइल ने लेबनान में ईरान समर्थित आतंकवादी समूह हिजबुल्लाह के खिलाफ सैन्य अभियान जारी रखा है। स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि मंगलवार को दक्षिणी शहर टायर पर हुए नए हमलों में कम से कम आठ लोग मारे गए। ईरान ने

सोमवार को चेतावनी दी थी कि लेबनान में इजराइल के किसी भी नए हमले का वह जवाब देगा। तेहरान में अधिकारियों ने कहा कि होर्मुज जलडमरूमध्य के पास ईरान के दक्षिणी तट पर धमाकों के बाद अब स्थिति शांत है। अमेरिकी डिजिटल समाचार आउटलेट एक्सियोस ने रिपोर्ट दी है कि अमेरिकी सेना ने होर्मुज जलडमरूमध्य के आसपास ईरान की अनेक वायु रक्षा और रडार प्रणाली पर हमला किया। इसके बाद ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अरागची ने जवाबी कार्रवाई की धमकी दी है। उधर, बहरीन के गृह मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि देश में अलर्ट जारी किया गया। आईआरजीसी ने अमेरिकी बेस पर हमला किया है। मंत्रालय ने एक्स पर कहा, सायरन बजाया गया है। नागरिकों और निवासियों से शांत रहने और निकटतम सुरक्षित स्थान पर जाने का आग्रह किया जाता है। मध्य पूर्व में अमेरिकी बलों की देखरेख करने वाली अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेंटकाम) ने एक्स पर कहा कि ईरान से अपाचे को मार गिराने का बदला पूरा कर लिया गया है। अमेरिकी वायु सेना और नौसेना के लड़ाकू विमानों से सटीक हथियारों का इस्तेमाल करते हुए होर्मुज जलडमरूमध्य के पास ईरानी वायु रक्षा प्रणालियों, ग्राउंड कंट्रोल स्टेशनों और निगरानी रडार साइटों पर हमला किया गया।

### नेपाल में भी भारतीय आमों पर रोक



काठमांडू। जापान के बाद अब नेपाल ने भारत से आम मंगाने पर रोक लगा दी है। नेपाल के अधिकारियों का कहना है कि जांच में कुछ खेपों में तय सीमा से ज्यादा कीटनाशक मिले। नेपाल सरकार के मुताबिक, यह फैसला खाद्य सुरक्षा नियमों का पालन कराने के लिए लिया गया है। सरकार ने साफ किया कि इसका मकसद भारत के साथ व्यापारिक रिश्तों को प्रभावित करना नहीं है। रोक लगाने से पहले करीब 15.8 मीट्रिक टन भारतीय आम नेपाल पहुंच चुके थे। इनकी कीमत लगभग 10 लाख नेपाली रुपये बताई गई है। यह मामला पर ऐसे सामने आया है, जब पिछले महीने जापान ने भी भारतीय आमों के आयात पर रोक लगाई थी। हालांकि जापान ने यह कदम कीटनाशकों की वजह से नहीं, बल्कि जांच और सफाई से जुड़े नियमों में कमी मिलने पर उठाया था। जापान के फैसले से अल्फासो, केसर, लंगड़ा और वंगनपल्ली जैसी भारतीय आम की मशहूर किस्मों का निर्यात प्रभावित हुआ था।

## अफ्रीकी लोगों को सुरक्षा कवच प्रदान करता है गहरा काला रंग

लंदन  
क्या आपको पता है, अफ्रीकी लोगों के लिए गहरा काला रंग प्रकृति का एक अद्भुत वरदान है। काला रंग उनकी त्वचा को वहां की अत्यंत तीव्र और हानिकारक धूप से एक सुरक्षा कवच प्रदान करता है। शोधकर्ता वैज्ञानिकों के अनुसार, हमारी त्वचा का रंग मेलेनिन नामक एक पिगमेंट (वर्णक) से निर्धारित होता है। मेलेनिन जितना अधिक होता है, त्वचा का रंग उतना ही गहरा होता जाता है। अफ्रीका के भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में सूरज की किरणें साल भर सीधी और बेहद तेज पड़ती हैं। यहां अल्ट्रावायलेट (यूवी) किरणों की मात्रा पृथ्वी पर सबसे अधिक होती है। मेलेनिन इन खतरनाक यूवी किरणों को प्रभावी ढंग से सोख लेता है और त्वचा को धूप से होने वाले नुकसान जैसे स्किन कैंसर, समय से पहले झुर्रियां पड़ना और अन्य गंभीर क्षति से बचाता है। यही कारण है कि अफ्रीकी मूल के लोगों में स्किन कैंसर की दर विश्व के अन्य हिस्सों की तुलना में काफी कम पाई जाती है। यह लाखों सालों के विकास का परिणाम है, जब मानव जाति अफ्रीका से निकलकर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में फैली, तो अलग-अलग जलवायु परिस्थितियों के अनुसार उनकी त्वचा का रंग भी बदलता गया।

जिन क्षेत्रों में धूप कम थी, वहां शरीर में मेलेनिन का उत्पादन कम हुआ और रंग गोरा होता गया, ताकि शरीर विटामिन डी का पर्याप्त संश्लेषण कर सके। लेकिन अफ्रीका में, जहां सूरज की



प्रचंडता बनी रही, मेलेनिन का उच्च स्तर भी बरकरार रहा।

यह प्रकृति का एक अनोखा और सटीक अनुकूलन है। काला रंग केवल एक रंग नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली सुरक्षा कवच है। मेलेनिन सीधे यूवी किरणों से डीएनए को होने वाले नुकसान से बचाता है, जिससे स्किन कैंसर का खतरा न्यूनतम हो जाता है। इसके अतिरिक्त, यह शरीर में विटामिन डी के संतुलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कुछ अध्ययनों से पता चला है कि गहरे रंग की त्वचा वाले लोग तेज धूप में अपेक्षाकृत अधिक समय तक बिना किसी गंभीर नुकसान के रह सकते हैं। यह

उनका प्राकृतिक आशुवाद है, जो उन्हें कठोर जलवायु में जीवित रहने और पनपने में मदद करता है। विकासवाद के सिद्धांत के अनुसार, अफ्रीका मानव सभ्यता का उद्गम स्थल है, और यहां की जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल होने के लिए गहरा रंग सबसे उपयुक्त विशेषता थी। जैसे-जैसे इंसान यूरोप और एशिया के उठे और कम धूप वाले क्षेत्रों की ओर बढ़े, शरीर को विटामिन डी की आवश्यकता के लिए कम मेलेनिन और गोरी त्वचा की जरूरत पड़ी। यह हजारों-लाखों सालों की एक जटिल प्रक्रिया थी। आधुनिक समय में भी काले रंग का यह जैविक लाभ महत्वपूर्ण बना हुआ है।

## पीओके की आजादी को लेकर लंदन में लग रहे नारे... तेरा बाप भी देगा आजादी से गूंज रहा ब्रिटेन

लंदन  
पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में पाकिस्तानी सेना द्वारा की जा रही सैन्य कार्रवाई और दमनकारी नीतियों के खिलाफ ब्रिटेन में निवासरत कश्मीरी समुदाय और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं ने लंदन में जोरदार प्रदर्शन किया। सैकड़ों प्रदर्शनकारी लंदन स्थित पाकिस्तान हाई कमीशन के बाहर एकत्र हुए और शाहबाज सरकार व सेना के खिलाफ नारेबाजी की, जिसमें क्षेत्र में मानवाधिकारों के गंभीर उल्लंघनों का आरोप लगाया गया। प्रदर्शनकारियों ने पीओके में नागरिकों की हत्याओं, बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियों और इंटरनेट सेवाओं पर प्रतिबंध लगाने का दावा किया, साथ ही आरोप लगाया कि लोगों की लोकतांत्रिक आवाज को दबाया जा रहा है और आम आदमी के अधिकारों को कुचला जा रहा है। प्रदर्शन के दौरान, पाकिस्तानी आर्मी गो बैक, हम छीन कर लेंगे आजादी, ये जो दहशतवादी हैं, इसके पीछे वर्दी है, और तेरा बाप भी देगा आजादी जैसे



सशक्त नारे गूंज उठे। प्रदर्शनकारियों ने स्पष्ट किया कि पीओके में हाल के दिनों में विरोध प्रदर्शनों को बलपूर्वक दबाया जा रहा है, जिससे क्षेत्र में तनाव और असंतोष चरम पर पहुंच गया है।

केवल लंदन ही नहीं, बल्कि ब्रिटेन के कई अन्य प्रमुख शहरों में स्थित पाकिस्तानी राजनयिक मिशनों के बाहर भी इसी तरह के विरोध प्रदर्शन आयोजित हुए। इन प्रदर्शनों में शामिल लोगों ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से पीओके की गंभीर स्थिति पर तत्काल ध्यान देने और वहां कथित मानवाधिकार उल्लंघनों की स्वतंत्र जांच कराने की पुरजोर मांग की। प्रदर्शनकारियों ने बैनर और पोस्टर लेकर पाकिस्तान सरकार की नीतियों का विरोध किया तथा वैश्विक संस्थाओं से इस मामले में हस्तक्षेप की अपील की।

पीओके में तनाव हाल के दिनों में तब बढ़ा जब जाइंट अवामी एक्शन कमेटी (जेएएसी) पर प्रतिबंध लगा दिया गया और उसके समर्थकों के खिलाफ व्यापक कार्रवाई की गई। इसी पृष्ठभूमि

में ब्रिटेन में बसे कश्मीरी मूल के लोगों ने पाकिस्तान सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने पीओके के लोगों के अधिकारों और उनकी राजनीतिक नेतृत्व की मांग का समर्थन करते हुए कहा कि असंतोष को बातचीत के बजाय सुरक्षा बलों के ज़ोर दबाने की कोशिश की जा रही है। जेएएसी के विरोध की मुख्य वजह पीओके की विधानसभा में 12 आरक्षित सीटों को लेकर लिया गया एक विवादास्पद फैसला है। 145 सदस्यीय विधानसभा में ये सीटें उन शरणार्थियों के लिए आरक्षित हैं, जो कश्मीर से जुड़े होने का दावा करते हैं, लेकिन वर्तमान में पाकिस्तान के अन्य हिस्सों में रहते हैं। जेएएसी और अन्य स्थानीय संगठनों का आरोप है कि इस व्यवस्था से स्थानीय लोगों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व कमजोर होगा और बाहरी प्रभाव बढ़ेगा, जबकि क्षेत्र के भविष्य से जुड़े फैसलों पर अधिकार केवल वहां रहने वाले लोगों का होना चाहिए।